मूर्ति का भगवान जिंदा भगवान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मंदिर में मूर्ति स्थापित की जाती है। किसी भी देवता की मूर्ति को शिल्पकार पत्थर को गढ़कर बनाता है। मंत्रोच्चार के माध्यम से मूर्ति की मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा होती है। मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद वह मूर्ति भगवान का रूप धारण कर लेती है और लोगों की आराध्य हो जाती है। मूर्ति का भगवान रिलेटिव धर्म है। रिलेटिव धर्म से पुण्य का बंधन होता है। इससे देवगति की प्राप्ति होती है। इससे जीव शुभ भावों से शुद्ध भाव में जाता है। अक्रम विज्ञान शुद्ध अवस्था से जुड़ा है। मन, वचन और काया की प्रवृत्ति से जो कुछ भी किया जाता है वह सापेक्ष धर्म है। जिंदा भवान हमारे भीतर विराजमान हैं। आत्मा ही मानव शरीर में जिंदा भगवान है। आत्मा की हाजिरी से ही सम्पूर्ण क्रियाएं होती हैं। यदि आत्मा न रहे तो शरीर मृत प्राय हो जाता है।

समस्त अंतरिक्ष जिसमें आकाशगंगायें, निहारिकायें, सौरमण्डल, तारे और ग्रह आते हैं उसे ब्रह्माण्ड कहते हैं। पृथ्वी भी ब्रह्माण्ड में स्थित है। ब्रह्माण्ड कितना विशाल है, इसका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि हमारी पृथ्वी इस ब्रह्माण्ड में एक विशाल रेगिस्तान के रेत के कण के समान है। ब्रह्माण्ड में सबसे छोटी इकाई सौरमण्डल है। सौरमण्डल में तारे और ग्रह है।

ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा स्थान है जहां जीवन है। ब्रह्माण्ड में प्रत्येक वस्तु गतिमान है। कोई स्थिर नहीं है। चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगा रहा है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगा रहा है। सूर्य आकाशगंगा का चक्कर लगा रहा है। आकाशगंगा भी ब्रह्माण्ड में चक्कर लगाती है। इस प्रकार ब्रह्माण्ड में सबकुछ गतिशील है। अभीतक ब्रह्माण्ड की पूर्णजानकारी नहीं हो पायी है। इसका न कोई आदि है न कोई अंत। इस ब्रह्माण्ड में सभी जीव रहते हैं। वेदों में कहा गया है कि सर्वप्रथम हिरण्यगर्भ की उत्पत्ति हुई। इसके उत्पत्ति होते ही यह सम्पूर्ण प्राणियों का स्वामी बन बैठा। सभी भूतों की उत्पत्ति इसी हिरण्यगर्भ से

मानी जाती है। वैदिक धर्म के अनुसार ईश्वर ही इस जगत का उत्पत्तिकर्त्ता, रक्षक और विनाशक है। ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है।

उत्पत्तिधर्मा सभी वस्तुएं नाशवान हैं। पंचभौतिक पदार्थों से वस्तुओं की रचना होती है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश पंचभूत कहलाते हैं। दृश्यमान जगत पंचभूतों का परिणाम है। आत्मा एक ऐसा तत्व है जो अजर–अमर और अविनाशी है। यह चेतनतत्व है। न तो इसका आदि है न अन्त। यह सर्वशक्तिमान तत्व है। आत्मा के कारण ही सभी पदार्थों में गतिशीलता दिखाई देती है। यह शरीर भी पंचभूतात्मक है। शरीर में जब तक आत्मा रहती है, तब तक यह जीवित रहता है। आत्मा के निकल जाने के बाद पंचतत्व में यह विलीन हो जाता है। इससे प्रमाणित होता है कि आत्मा ही शरीर को चलाने वाला है। शरीर जैसे पहले था वैसे ही रहता है, केवल एक ही तत्व के न रहने से यह शरीर शांत हो गया। इससे यह ज्ञात होता है कि आत्मा ही सर्वशक्तिमान, सबको चलाने वाला और सबको गति प्रदान करने वाला है।

गीता में कहा गया है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्रों को धारण करता है, वैसे ही आत्मा भी पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को धारण करता है। जन्म–मरण का चक्र दुःख का कारण है। आत्मा कर्म के कारण आवृत्त रहता है। कर्म का आवरण हटते ही आत्मा शुद्ध रूप में स्थित हो जाता है। आत्मा का भाव ज्ञाता और दृष्टा का है। वह सच्चिदानन्द है। जगत नियन्ता व्यवस्थित शक्ति है। उसे ईश्वर, ब्रह्म, सर्वशक्तिमान कहा गया है। आत्मा ही एक ऐसा शाश्वत तत्त्व है जिसके आधार पर मानव अपने अस्तित्त्व को सिद्ध करता है। परमात्मा या ईश्वर सर्वज्ञ है, और एक है। जीवात्मा प्रत्येक शरीर में भिन्न–भिन्न व्यापक और नित्य है।

परमतत्त्व अंतिम तत्त्व है, सर्वाधार है, सभी वस्तुओं का मूलस्थान है। उसी को मूलतत्त्व कहा जा सकता है, जिससे इस जगत् की उत्पत्ति हुयी है, जो सभी वस्तुओं की सत्ता का आधार है और जिसमें अन्ततः इन सभी वस्तुओं का लय हो जाता है। जगत् का आदि और अन्त ईश्वर को माना गया है। अतः ईश्वर ही परमतत्त्व है। इसे ही परमात्मतत्त्व भी कहते हैं। ब्रह्म के दो रूप माने गये हैं– मूर्त्त और अमूर्त्त, मर्त्य और अमृत, स्थित और चर तथा सत् और त्यत्। ब्रह्म

को सविशेष सगुण भी कहा गया है और निर्विशेष निर्गुण भी। सगुण ब्रह्म को 'अपर' ब्रह्म और निर्गुण ब्रह्म को पर ब्रह्म कहा गया है।

आत्मा एक ऐसा तत्व है जिसमें किसी प्रकार की विकृति नहीं आती है। यह अपने स्वरूप में चैतन्य युक्त है। शेष जितने भी पदार्थ हैं वे भौतिक तत्व हैं। उन पदार्थों में परिवर्तन, परिवर्धन होता रहता है। आत्मा और जड़ का जब संयोग होता है तो जड़ पदार्थ भी आत्मवत प्रतीत होने लगता है। शरीर जड़ है और आत्मा चेतन। शरीर से जब आत्मा का संयोग होता है तो जड़ शरीर भी आत्मवत् प्रतीत होने लगता है। शरीर से अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के कार्य किये जाते हैं। मूलतः आत्मा के शुद्धि और अशुद्धि का कोई प्रश्न नहीं है। शरीर में शुद्धता और अशुद्धता देखी जाती है। शरीर आत्मा का घर है। शरीर नश्वर है और इसके अन्दर विद्यमान आत्मा जिंदा भगवान है।